

धर्मेंद्र

धर्मेंद्र का जन्म पंजाब के एक गांव साहनेवाल में हुआ था और बचपन से ही पढ़ाई के बजाए उन्हें फिल्मों का शौक था. स्वभाव से हंसमुख होने के कारण धर्मेंद्र अपने गांव में सभी के लाड़ले थे और गांव की ओरतें धर्मेंद्र से गांव के लोगों की नकलें उतरवाती थीं. बालक धर्मेंद्र को भी लोगों की नकल उतारने में आनंद आता था. यही नकल की आदत संभवतः धर्मेंद्र के अभिनेता बनने में प्रेरक बनी. स्कूल में पढ़ाई करने के साथ-साथ धर्मेंद्र चोरी-चोरी, चुपके-चुपके फिल्में भी देखा करते थे. कई बार पकड़े जाने पर पिटाई भी हुई थी. पढ़ाई के दौरान ही छोटी उम्र में धर्मेंद्र का विवाह कर दिया गया और हाई स्कूल के बाद रेलवे में क्लर्क की नौकरी लगवा दी गई. लुधियाना में रेलवे क्लर्क के रूप में धर्मेंद्र को सवा सौ रुपए मासिक वेतन मिलता था.

किंतु धर्मेंद्र इस नौकरी और इस जीवन से संतुष्ट नहीं थे. उन्हें तो फिल्मों का मोह बार-बार अपनी ओर खींचता था. आखिर एक दिन धर्मेंद्र ने मुंबई से प्रकाशित होने वाली एक अंग्रेजी पत्रिका में टेलेंट कांटेस्ट का फॉर्म भर दिया. इस प्रतियोगिता में धर्मेंद्र को चुन लिया गया और इस प्रकार धर्मेंद्र 1958 में मुंबई पहुंच गए. मुंबई में धर्मेंद्र को कठिन संघर्ष करना पड़ा. एक ओर फिल्मों को लेकर उनके



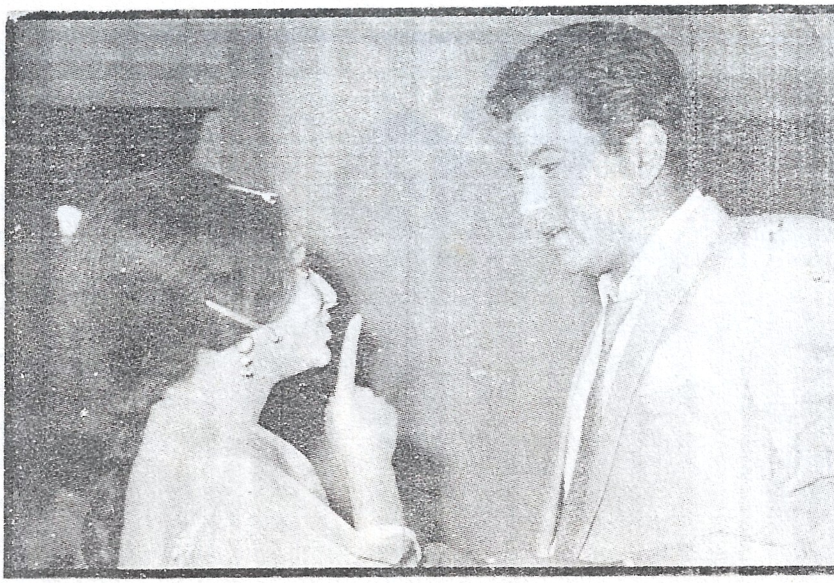


पिता नाराज थे और परिवार से संबंध तक तोड़ लेने की धमकी दे दी थी, दूसरी ओर प्रतियोगिता में उत्तीर्ण हो जाने के बावजूद धर्मेंद्र को फिल्मों में काम नहीं मिल रहा था. एक दिन धर्मेंद्र की मुलाकात अर्जुन हिंगोरानी नामक निर्माता-निर्देशक से हुई जो सिंधी भाषा में एक फिल्म बना चुके थे और अब हिन्दी भाषा के लिए किसी हीरो की तलाश में थे. कोई भी बड़ा हीरो नए निर्देशक के साथ काम करने को तैयार न था. इसलिए अर्जुन हिंगोरानी ने अपने दोनों भागीदार मित्रों के साथ सत्रह-सत्रह रुपए जमा किए और इक्यावन रुपए में धर्मेंद्र को अपनी पहली फिल्म *दिल भी तेरा हम भी तेरे* के लिए हीरो के रूप में अनुबंधित कर लिया. किंतु इस अनुबंध के साथ एक शर्त यह भी जुड़ी थी कि धर्मेंद्र तीन साल तक जो भी फिल्में साइन करेंगे उसके पारिश्रमिक की आधी राशि उन तीनों भागीदारों को देंगे.

अभी *दिल भी तेरा हम भी तेरे* की शूटिंग आरंभ ही हुई थी कि निर्माता-निर्देशक रमेश सहगल ने धर्मेंद्र को अपनी नई फिल्म *शोला और शबनम* के लिए अनुबंधित कर लिया. किंतु यहां भी अनुबंध में वही तीन साल की शर्तें थीं कि धर्मेंद्र तीन साल में जो भी फिल्में

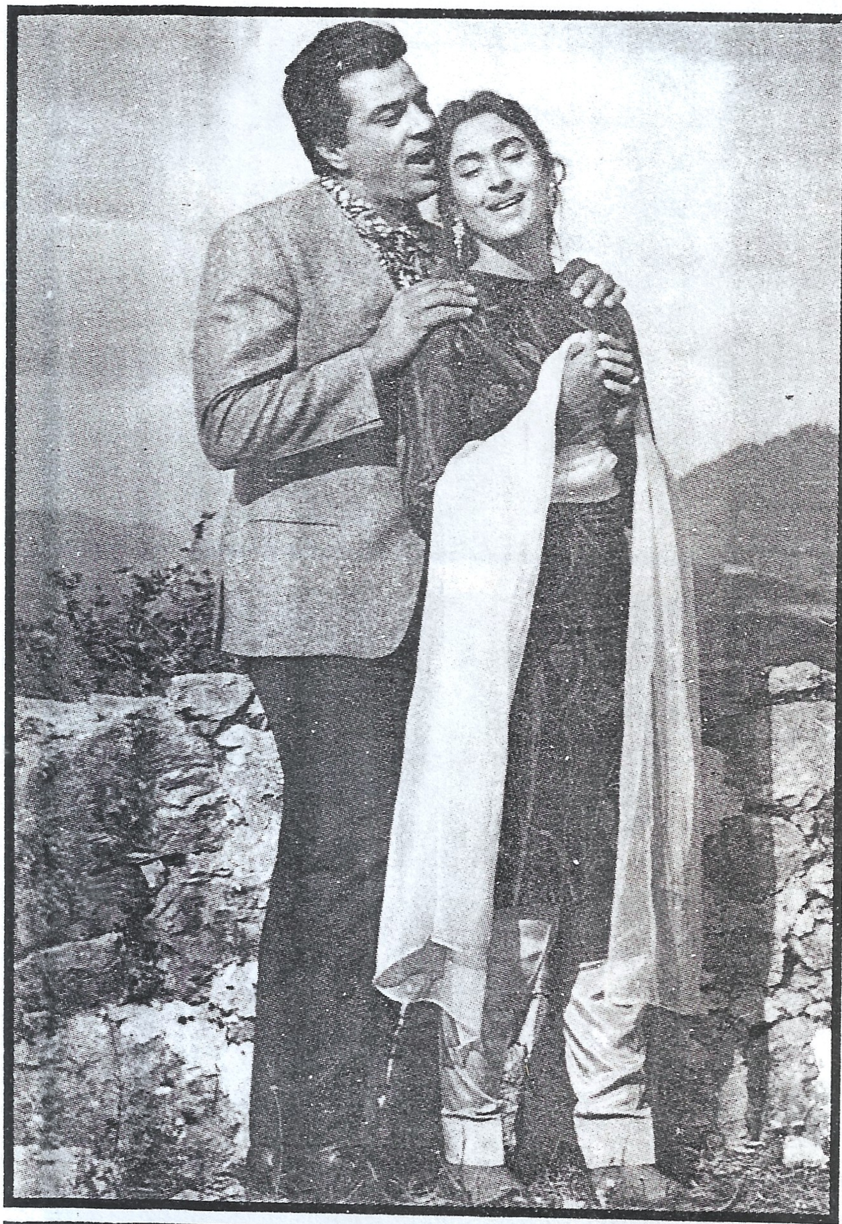
करेंगे उन फिल्मों की कमाई का आधा हिस्सा रमेश सहगल को देंगे. विवश धर्मेंद्र को फिल्मों की जरूरत थी और रमेश सहगल बड़े निर्माता निर्देशक थे. धर्मेंद्र ने उनकी शर्तें भी मान लीं और इस प्रकार धर्मेंद्र तीन साल तक फिल्मों में जो भी कमाते रहे वह आधा रमेश सहगल और आधा अर्जुन हिंगोरानी एंड कंपनी को देते रहे.

शोला और शबनम की घोषणा के बाद धर्मेंद्र को फिल्में तो मिलने लगीं किंतु इस बीच *दिल भी तेरा हम भी तेरे* की असफलता के कारण उनका संघर्ष लंबा और कठिन हो गया. आखिर *फूल और पत्थर* की सफलता ने धर्मेंद्र के सुनहरे भविष्य का द्वार खोल दिया और वह स्टार बन गए. *फूल और पत्थर* की अपार सफलता के बाद धर्मेंद्र ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. चालीस वर्षों के लंबे अभिनय कैरियर में धर्मेंद्र ने सैकड़ों फिल्मों में काम किया है और वह *फूल और पत्थर, सत्यकाम, बंदिनी, अनुपमा, सीता और गीता, शोले* और *प्रतिज्ञा* को अपनी सर्वश्रेष्ठ फिल्में मानते हैं. हिन्दी फिल्मों के संसार में धर्मेंद्र ही वह पहला एक्टर है जिसने व्यवसाय में दो दो और बाद में तीन-तीन शिफ्टों में काम करना आरंभ किया था, क्योंकि एक साथ चालीस पचास फिल्मों में काम करने के लिए दो-दो, तीन-तीन शिफ्टें करना जरूरी था. बाद के कलाकारों ने भी धर्मेंद्र की इस डबल शिफ्ट की नकल की और यह सिलसिला आज भी जारी है. धर्मेंद्र की शराबखोरी के किस्से भी बहुत मशहूर रहे हैं. अपने व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं के कारण एक जमाने में धर्मेंद्र खूब शराब पीने लगे थे. किंतु धर्मेंद्र की शराबखोरी के कारण किसी निर्माता को कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचा. धर्मेंद्र के जीवन में कई अभिनेत्रियों के साथ उनके प्रेम-संबंधों के समाचार आते रहे किंतु मीना कुमारी के साथ धर्मेंद्र के संबंध अति भावुकतापूर्ण थे. मीना कुमारी के बाद धर्मेंद्र के प्रेम-संबंध हेमा मालिनी के साथ गंभीर हुए जो अंततः दूसरे विवाह में बदल गए. धर्मेंद्र फिल्मों के पर्दे पर सिकंदर बनने की महत्वाकांक्षा रखते थे किंतु उनके अभिनय-जीवन की यह महत्वाकांक्षा आज भी बाकी है. अपने मुंहफट और स्पष्ट स्वभाव के कारण ही प्रेस और फिल्म व्यवसाय में धर्मेंद्र को जाट हीरो कहा जाने लगा था. इस जाट



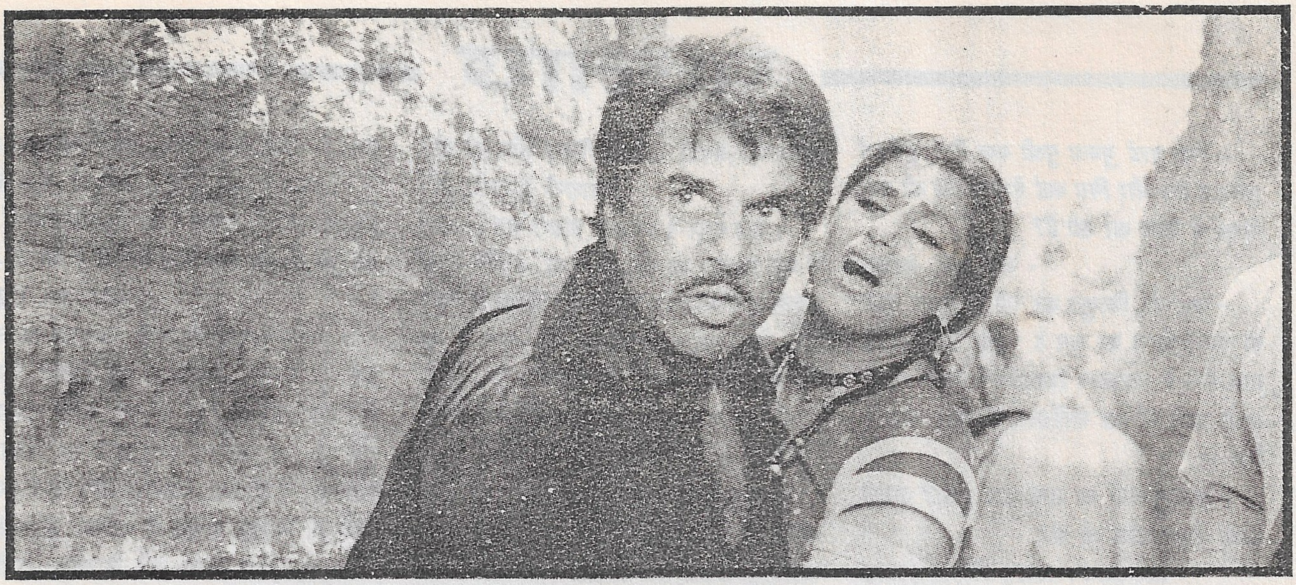


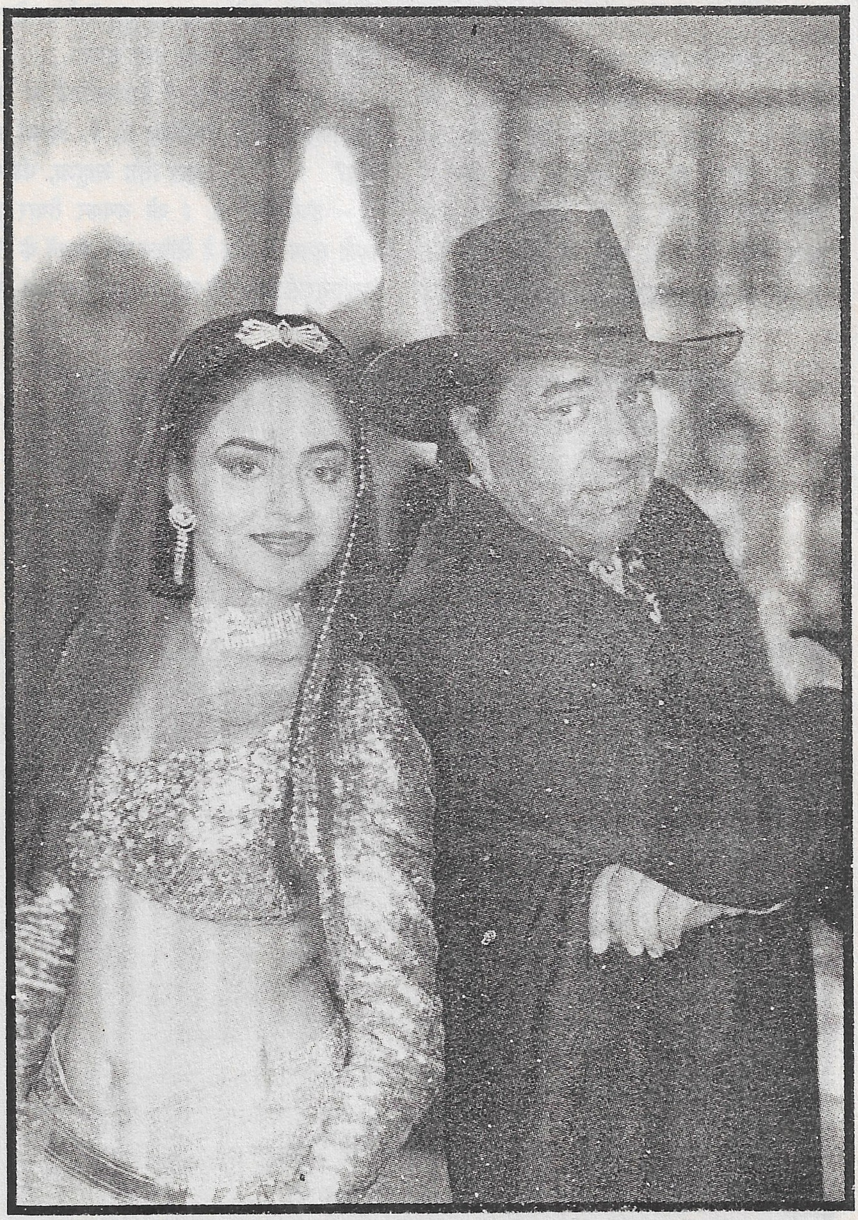




हीरो की छवि का जन्म *फूल और पत्थर* की अपार सफलता के बाद एच.एस. रवैल की एक पार्टी से हुआ था. इस पार्टी में धर्मेंद्र के प्रवेश के साथ ही श्रीमती अंजना रवैल ने पूछा था कि उनकी पत्नी साथ में नहीं आईं तो धर्मेंद्र ने बड़ी सादगी से जबाव दिया कि उनका तो टिड्ड निकला हुआ है. (उनका तो पेट निकला है) यह सुनकर अंजना रवैल हंस पड़ीं और उनके साथ पार्टी में मौजूद अन्य लोग भी हंसने लगे. बस यहीं से धर्मेंद्र को जाट हीरो कहा जाने लगा था. हिन्दी फिल्मों में अशोक कुमार जैसे बहुत की कम अभिनेता है जिन्होंने अपनी भूमिका जीने के लिए अपने चेहरे को काला और कुरूप बनाया. धर्मेंद्र ने भी *रजिया सुल्तान* फिल्म में याकूत हब्शी के चरित्र को जीने के लिए अपने चेहरे को काला और कुरूप बनाया था. फिल्मों में आरंभ के संघर्ष को देखकर ही धर्मेंद्र ने कुछ पैसे छोटी-छोटी फिल्मों में काम करके जमा किए और एक पुरानी फिएट कार खरीद ली थी. इसी कार में धर्मेंद्र निर्माता-निर्देशकों से मिला करते थे. धर्मेंद्र की योजना थी कि अगर वह फिल्मों में सफल न हो सके तो उस फिएट कार को टेक्सी बना कर टेक्सी ड्राईवर बन जाएंगे. किंतु धर्मेंद्र सफल हो गए और स्टार बन गए. कई बड़ी-बड़ी शानदार और महंगी कारें भी आ गईं. किंतु संघर्ष के दिनों की साथी यह फिएट कार आज भी धर्मेंद्र के पास मौजूद है. धर्मेंद्र के परिवार नंबर एक में दो पुत्र सनी और बॉबी व दो पुत्रियां मुन्नी व लाली और परिवार नंबर दो में ईशा और आइना दो पुत्रियां हैं.







हिन्दी फिल्मों में धर्मेंद्र को ही आज तक सही मायनों में हीमैन माना जाता है. दर्जनों फिल्मों में प्रभावशाली और स्वाभाविक अभिनय करने वाले इस बेजोड़ अभिनेता को कभी श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में कोई पुरस्कार नहीं मिला, क्योंकि उनका मुकाबला हर वर्ष राज कपूर, दिलीप कुमार देव आनंद और बाद में संजीव कुमार व अमिताभ बच्चन जैसे दिग्गजों से होता था और वे ही श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार ले जाते थे. धर्मेंद्र ने फिल्मों की तीन पीढ़ियां देखी हैं और मीना कुमारी से लेकर मुमताज जैसी कमसिन अभिनेत्रियों के साथ काम किया है. धर्मेंद्र ने अब तक तीन सौ से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है. इनमें से पचास फिल्मों ने गोल्डन जुबली मनाई है जो अपने आप में शायद एकमात्र रेकॉर्ड है.

धर्मेंद्र की तमन्ना थी कि उनका बेटा सनी भी एक्टर बने और किसी फिल्म में बाप-बेटे दोनों साथ-साथ काम करें. आखिर अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म *सल्तनत* में धर्मेंद्र की यह तमन्ना भी पूरी हो गई. धर्मेंद्र ने हॉलीवुड की एक फिल्म *शालीमार* में भी काम किया और रेक्स हैरीसन और ब्रिजिता बार्दो जैसे विदेशी कलाकारों के साथ अभिनय किया. धर्मेंद्र को अंग्रेजी नहीं आती थी. किन्तु *शालीमार* के बाद धर्मेंद्र अंग्रेजी भी बोलने लगे. अभिनेता के रूप में मील का पत्थर बन जाने के बाद धर्मेंद्र ने निर्माता के रूप में अपनी पहली फिल्म *घायल* बनाई और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया. धर्मेंद्र आज भी सक्रिय हैं और फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं.

- स्मृति